ISBN: 978-93-90847-27-3

2. पर्यावरण चिंतन (प्राचीन भारत में – विशेष संदर्भ – महाकवि कालिदास एवं महर्षि श्री शुक्राचार्य रचित शुक्रनीति)

डॉ. विम्मी बहल

सहायक प्राध्यापक,
अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल.

डॉ. अनिल शिवानी

प्राध्यापक,
शा. हमीदिया महाविद्यालय.

पर्यावरण प्रकृति का अपूर्व कोष है। इस कोष के द्वारा ही मानव जीवन गतिमान है। गहनचिन्तन का विषय यह है कि पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर समस्या ने विश्व के सभी विकसित और विकासशील देशों की आंखों की नींद उड़ा रखी है। राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर इस ज्वलंत समस्या के निराकरण के लिये प्रयत्न किये जा रहे है।

पर्यावरण का सामान्य अर्थ आसपास मौजूद भौतिक परिवेश से है जो पृथ्वी के जीवन जगत को चारों ओर से घेरे हुये है। वह पर्यावरण ही है जो सम्पूर्ण जीवन जगत स्थलमण्डल, वायुममण्डल और जल मण्डल से आवृत्त है और यह आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। यूनिवर्सल विश्वकोष के अनुसार – ''पर्यावरण के अन्तर्गत उन सभी दशाओं, संगठन एवं प्रभावो को सम्मिलित किया जाता है जो किसी जीवन अथवा प्रजाति के उद्‌भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है।'' इस परिभाषा से पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के अन्तर्गत विभिन्न तत्वों की क्रिया प्रतिक्रिया से जिस वातावरण का निर्माण होता है उसे पर्यावरण कहते है। यूनिवर्सल विश्वकोष से मिलती जुलती परिभाषा ''एनसाक्लोपीडिया ब्रिटेनिका'' में भी दी गई है। पर्यावरण उन सभी बाह्य प्रभावों का समूह है जो जीवों को भौतिक एवं जैविक शक्ति से प्रभावित करते रहते हैं तथा प्रत्येक जीवन को आवृत किये रहते हैं।

उपयुक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि पर्यावरण उनके तत्वों से मिलकर बनता है जिसमे प्राकृतिक तत्वों का समूह प्रमुख है। जो जीवन जगत को एकांकी एवं सामूहिक रूप से प्रभावित करता है। अलग – अलग विज्ञानों में पर्यावरण को प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक पर्यावरण के रूप में उल्लेखित किया गया है। किन्तु इन सभी पर्यावरणों में प्राकृतिक पर्यावरण ही मौलिक है। प्राकृतिक तत्वो के प्रभाव व उपयोग से ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण का जन्म होता है और इन्ही से ये सभी संचालित होते है।

पर्यावरण अनेक तत्वों समूह का नाम है जिसमे प्रत्येक समूह का अपना महत्वपूर्ण स्थान है कुछ विद्वानों ने पर्यावरण के कारकों के दो वर्गों मे वगीकृत किया है

प्रत्यक्ष कारक – जैसे मृदा, तापक्रम, आर्द्रता, भूमिगत जल व भूमि की पोषकता आदि।

अप्रत्यक्ष कारक – जैसे भूमि की संरचना, जीवाणु धरातल की ऊँचाई ढलान एवं हवा आदि।

इसी प्रकार वनस्पति विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान ओस्टिंग ने 1948 में पर्यावरण के निम्न तत्व वर्णित किये है।

पदार्थ – मृदा एवं जल

दशाएँ – तापक्रम एवं प्रकाश

बल – वायु एवं गुरूत्वाकर्षण

जीव – वनस्पति एवं जीवजंतु

समय – ऋतुचक्र, दिन–रात, विभिन्न तत्व चक्रों में लगने वाला समय

भौगोलिक अध्ययन में पर्यावरण मुख्य घटक है भौगोलिक अध्ययन में पर्यावरण के निम्नलिखित तत्वों की व्याख्या की गई है

1. जलीय तत्व

   अ) समुद्री जल भण्डार ब) सतही जल भण्डार स) भूमिगत जल भण्डार

2. स्थिति

3. मिट्टी

4. जलवायु

5. प्राकृतिक वनस्पति

हमारे वेदों पुराणों ने समस्त प्राणियों को अपने पर्यावरण एवं सम्पूर्ण प्रकृति की रक्षा करने का संदेश दिया ही है। ऋग्वेद की कई रचनाओं में पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि तथा वायु को माँ–पिता, पुत्री की तरह से स्वीकारा गया है। वैदिक आचार्य उन सभी तत्वों की स्तुति करते है। अथर्ववेद एवं आयुर्वेद में ऋषियों ने वनस्पति को पूजनीय माना है मनु स्मृति के आचार्य एवं शुक्रनीति में आचार्य राजाओ को पर्यावरण संरक्षण के लिये निर्देशित करते है। भारतीय उपनिषद, पुराण, रामचरित मानस तथा अन्य ग्रंथो मे जीवन के पाँच मूल तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश माने गये हैं। इनसे ही समस्त सृष्टि की उत्पत्ति स्वीकार की गई है। यह पाँचों तत्व प्रकृति के अहम हिस्से है तथा मानव शरीर की रचना भी इन्ही पाँचो तत्वों से हमारा पोषण करती है। पर्वतों के प्रति हमारे पूर्वजों की दृष्टि कितनी सम्मानपूर्ण थी, इसका सर्वोत्तम उदाहरण हमे कालिदास के कुमार सम्भव से प्राप्त होता है, जहाँ हिमालय को देवात्मा और पृथ्वी को मानदण्ड कहकर उसकी प्रतिष्ठा व्यक्त की गई हैं। कालिदास का प्रकृति प्रेम विश्व विश्रुत है।

अस्त्युतरस्यां दिशि देवात्मां हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वपरौ तोयनिधि वगाह स्थितः पृथ्वियाम् इव मानदण्डः।

नदियों का अमृत जैसा जल पीकर ही हम जीवन धारण करते है उनमे स्नान करके हम पवित्र होते है, इसलिए कहा गया है कि –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे, सिन्धु कावेरी जलेअस्मिन ससन्निधिं कुरू।।

अर्थर्ववेद मे पीपल के वृक्ष को देवसदन कहा है। **अश्वत्यः देवसदनः।** स्कन्दपुराण में भी सभी वृक्षों में विष्णु का वास बताया गया है **एको हरिः सकल वृक्षगतो विभति।**

वृक्षोरोपण के प्रचार प्रसार के निमित्त प्राचीन भारती मनीषियों ने इससे नाना प्रकार के लाभ बताए हैं विष्णु धर्मसूत्र के अनुसार इस जन्म मे लगाए गए वृक्ष अगले जन्म में संतान के रूप में मिलते है।

वृक्षारोपयति वृक्षाः परलोके पुत्राः भवन्ति।।

'वाराह पुराण' में कहा गया है कि जो पीपल, नीम या बरगद का एक, अनाया या नारंगी के दो, आम के पाँच और अन्य लताओ के दस वृक्ष लगाते है, वे कभी नरक में नही जाते।

अश्वत्यमेंकं पिचुमिन्देमेकं न्यग्रोधमेकं दशपुष्पजातीः।

द्वेद्वे तथा दात्रिम मातुंलगे पंचाम्ररोली नरकं न याति।।

तुलसी के औषधीय गुण सर्वविदित है, तभी कहा गया है कि जिस घर में तुलसी की नित्य पूजा होती है, उस घर मे यमदूत कभी नही जाते है।

तुलसी यस्य भवने प्रत्यंह परिपूज्यते।

तदगृहं नोपसर्पन्ति कदाचित यमकिमंराः।।

प्राचीन भारत में जहाँ वृक्षारोपण को लाभदायक और पुण्यकर्म बताया गया है, वही वृक्ष को काटना वर्जित और पाप ठहराया गया है। महाभारत मे वृक्ष की पत्तियों तक तोड़ना वर्जित माना गया है, विष्णु धर्मसूत्र स्कन्द पुराण मे वृक्ष के काटने की अपराध ठहराया गया है और उसके लिए राजा द्वारा दण्ड का प्रावधान रखा गया है।

धरती, पर्वत, नदी तथा वृक्ष आदि के लिए इस प्रकार की माननीय संवेदनशील भावनाओं का उदेक करने के पीछे मूलतः पर्यावरण संरक्षण का ही भाव निहित था। धर्म अधर्म और पाप पुण्य जैसी मात्राओं के माध्यम से वे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सामाजिक चेतना जगाना

चाहते थे और इसमें वे पूर्णरूप से सफल भी हुये थे। वर्तमान युग में मनुष्य द्वारा प्रकृति पर अधिकार जमाने तथा उसका दुरूपयोग करने की प्रवृत्ति घातक सिद्ध हुई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रकृति को उसकी सुन्दरता, ताजगी और पवित्रता से वंचित किये बिना हम स्वयं को जीवन जीने के कला में पारंगत कर सके। आज फिर से वैसी ही मान्यताओं को कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। जो हमारे प्राचीन ग्रंथो मे वर्णित/उल्लेखित है। पर्यावरण प्रदूषण से मानव सभ्यता की सुरक्षा के लिए हमे अपने पूर्वजो के विचारों पर ध्यान देना होगा और तद्नुकूल आचरण भी करना होगा तभी हमारा और मानवजाति का कल्याण सम्भव है।

सन्दर्भ सूची :–

1. यूनिवर्सल विश्वकोष टवस 6 पेज 310
2. एनसाक्लोपीडिया ब्रिटेनिका
3. मनुस्मृति टवस 1
4. महर्षि श्री शुक्राचार्य रचित शुक्रनीति
5. पर्यावरण अध्ययन–डॉ रतन जोशी
6. पर्यावरण अध्ययन – धनजय वर्मा म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी